बृजेन्द्र उत्कर्ष
कवि एवं लेखक

206, टाइप-2, आई. आई. टी., कानपुर, भारत
मो. 91-9956171230, फो. 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

तन्हा सफर

मेरी तन्हा सी जिन्दगी में, आओ बहार बनके,
खुशबू का जैसे झोंका आया हो एक चमन से
सावन के बादलों से जैसे हो बूँद टपके,
मेरी तन्हा सी.....//
तन्हा सी जिन्दगी में है हर तरफ उदासी,
कितनी ही महफिलों में बेबस है ये उदासी,
चन्दा की चाँदनी भी मुझको लगे तपिश सी,
अब तो आ भी जाओ खुशबू का जैसे झोंका
मेरी तन्हा सी .....//
सावन भी बीता तन्हा, भादौं भी दे गया गम
आया बसन्त फिर भी गम हुआ न मेरा कम
साया भी मेरा मुझको दे जत कुछ नया गम,
अब तो आ भी जाओ टूटे सब मेरे गम //
मेरी तन्हा सी.....//
आना नही है तो फिर क्यों सपनों में देते दस्तक,
तन्हाई के सफर में उलझे न जाने कबतक,
दिखती नही है मन्जिल, मिलता नही है साहिल,
अब तो आ भी जाओ बन कर के तुम खिवैया
मेरी तन्हा सी.....//
दुनियाँ मेरी है सूनी सूनी मेरी कहानी,
प्यासे मेरे नयन है प्यासी मेरी जवानी,
बिन तेरे मेरा जीवन लगता मुझे बेमानी,
अब तो आ भी जाओ बन मेरी जिन्दगानी,
मेरी तन्हा सी.....//

****

अनकही मोहब्बत

मोहब्बत हो गई जिनसे, हम उनसे कह नही पाये/
प्यार की आग सीने मे, लगा उनके नही पाये//
मोहब्बत हो गई.....
सावन कितने भादौ कितने, कितने मौसम आये/
फिर भी मेरे जीवन से ये, पतझड क्यों न जाये/
कोई किसी को इतना चाहे, वो भी मिल न पाये/
मेरे हिस्से इस जग के ये, सारे गम क्यों आये//
मोहब्बत हो गई.....
सूरत उनकी मेरे दिल को, पल-पल है तडफाये/
नाम लवो पे मेरे उनका, हरदम ही क्यों आये/
मेरे जीवन का सूनापन, ही अब मुझको खाये/
जान से जयादा चाहा जिसको , मुझको जान न पाये//
मोहब्बत हो गई.....
मुझे उनसे प्यार कितना, जता भी क्यों नही पाये/
टूटे दिल के टुकडो को, दिखा उनको नही पाये/
डूबती इशक की कशती,किनारे ला नही पाये/
जिए भी तो जिए कैसे,जिया बिन उनके न जाये//
मोहब्बत हो गई.....

****